VIBRANT GANGA

सोन नदी

सुनहरी नदी

नमामि गंगे

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

विस्तृत जानकारी

- सोन नदी बारहमासी नदी है, जो मध्य प्रदेश मे मैकलरेंज की अमरकंटक पहाड़ियों से 600 मीटर समुद्र तल की ऊंचाई से निकलती है।
- नदी की कुल लंबाई 784 किलोमीटर है, जिसमे से लगभग 500 किलोमीटर मध्य प्रदेश में, 82 किलोमीटर उत्तर प्रदेश में और शेष 202 किलोमीटर झारखंड और बिहार में बहती है।
- नदी उत्तर–पश्चिम दिशा में बाणसागर जलाशय तक बहती है, जिसके बाद यह तेजी से पूर्व की ओर अपना मार्ग बदलते हुए कैमूर रेंज के समानांतर बहती है, और बिहार में पटना से 30 किलोमीटर ऊपर गंगा नदी मे मिलती है।
- सोन नदी की प्रमुख सहायक नदियॉ– बनास, गोपद, रिहंद, कन्हार और उत्तर कोयल है।

मुख्य विशेषताऐं

- सोन नदी दो जैव–भौगोलिक क्षेत्रों, दक्कन के पठार और गंगा के मैदानों से होकर बहती है।
- वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत सोन घड़ियाल अभ्यारण्य, जिसमे नदी का 160 किलोमीटर लंबा हिस्सा, गंभीर रुप से संकटग्रस्त घड़ियाल के लिए संरक्षित है।
- सोन नदी कछुओं की सात प्रजातियों, मगरमच्छों की दो प्रजातियों, और 82 जलीय पक्षी और जल से संबंधित पक्षियों की प्रजातियों का घर है, जिसमें आईलैंड नेस्टिंग पक्षी भी शामिल हैं। नदी से मछली की 10 प्रजातियों को दर्ज किया गया है।
- सोन नदी, घड़ियाल और मगर जैसे प्रमुख संकेतक प्रजातियों की आबादी को एक उपयुक्त आवास स्थान प्रदान करती है।

सोन नदी को तीन क्षेत्रों मे विभाजित किया गया है–

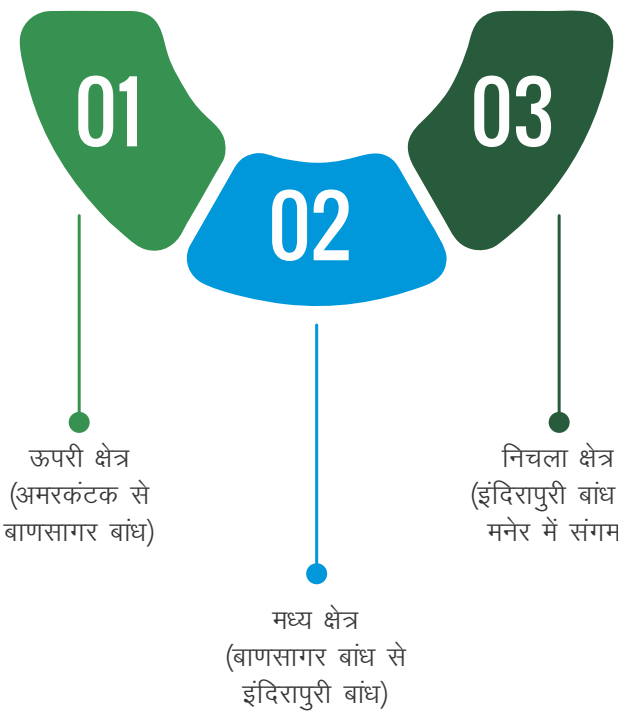

- कछुओं की सात प्रजातियां, अर्थात लाल सिर कछुआ *(बटागुर कछुगा)*, ढोन्ड *(बटागुर ढोंगोंका)*, साल *(हार्डेला थुरजी)*, पचौरिया *(पंगशुरा टेंटोरिया)*, चित्रा (*चित्रा इंडिका*), पचेरा (*निल्सोनिया गैंजेटिका*), सुंदरी (*लिसेमिस पंक्टाटा*) नदी से दर्ज किया गया है।

संकटग्रस्त (EN) *प्रजातियाँ*

सरीसृप

चित्रा

पक्षी

पनचीरा

ब्लैक–बेलिड टर्न

पलाश फिश –ईगल

स्तन धारी

गांगेय डॉल्फिन

गंभीर रूप से संकटग्रस्त (CR) *प्रजातियाँ*

सरीसृप

घड़ियाल

लाल सिर कछुआ

ढोन्ड

प्रमुख संरक्षित क्षेत्र

- पनपथा वन्यजीव अभ्यारण
- सोन घड़ियाल वन्यजीव अभ्यारण
- बगदरा वन्यजीव अभ्यारण
- कैमूर वन्य अभ्यारण (उत्तर प्रदेश)
- कैमूर वन्य अभ्यारण (बिहार)

रोचक तथ्य

- सोन नदी को सुनहरे रंग की रेत के कारण "हिरण्यवाह" कहा जाता है। यह माना जाता था कि नदी अपने प्रवाह में सोने की धूल ले जाती है।
- सोन नदी का ऊपरी भाग मध्य भारत के बाघ के क्षेत्रों से होकर गुजरती है।
- घड़ियाल और मगरमच्छों की आबादी के संरक्षण और बहाली के लिए प्रोजेक्ट क्रोकोडाइल के तहत 1981 में सोन घड़ियाल अभयारण्य की स्थापना की गई थी।
- सोन नदी पर सिंचाई नहरों ने बिहार के जिलों जैसे–औरंगाबाद, जहानाबाद, पटना और बक्सर को ग्रेन बाउल के रूप में बदल दिया है।

नदी-परिदृश्य (रिवरस्केप) को बदलने वाले कारक

- ऊपरी क्षेत्र में, घाटन नाला, नरगधा नाला, टंकी नाला, गैबुध नाला, और बैगा नाला जैसे कई नालों के माध्यम से निकलने वाला सीवेज, सोन नदी के पानी की गुणवत्ता को खराब कर रहा है।
- बाणसागर बांध और इंद्रपुरी बैराज से अधिक जल निकासी से नदी के जल निर्वहन में कमी आ रही है।
- बांध और बैराज अनुदैर्ध्य बाधाओं के रुप में कार्य करते हैं, जिससे आवास विखंडन और क्षरण होता हैं।
- बिहार और उत्तर प्रदेश मे सोन नदी के मध्य और निचले भाग में नदी तल खनन एक मुख्य कारण है जो नदी की गुणवत्ता को प्रभावित करता हैं।

एन एम सी जी
राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन, नदी विकास और
गंगा संरक्षण विभाग,
मेजर ध्यानचंद्र स्टेडियम, नई दिल्ली–110001

भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

जी ए सी एम सी
गंगा एक्वालाइफ कनजर्वेशन मॉनिटरिंग सेंटर
भारतीय वन्य जीव संस्थान
पोस्ट बॉक्स न. 18, मोहब्बेवाला, देहरादून–248002, उत्तराखंड
फोन न.- 91-135-260112-115
wii.gov.in/nmcg_phase2_introdution